इकाई - III Date - 01.06.2020

Topic ⇒ भाषा सीखने - सीखाने के उद्देश्य की समझ

Ans → आपके विचार से बच्चों को भाषा सीखाने का क्या उद्देश्य हो सकता है? हम यह भी जानते है और इकाई 3 मे विस्तार से चर्चा कर चुके है कि बच्चे विद्यालय आने से पहले ही भाषा की अनेक संरचनाओ पर अधिकार रखते है। वे अपनी भाषा मे बातचीत कर सकते है और समझ सकते है। तो फिर विद्यालय मे भाषा क्यो पढ़ाई जाती है? ~~वे अपनी भाषा मे बातचीत कर सकते है और समझ सकते है~~। आप मे से कुछ का जवाब यह हो सकता है कि उन्हे पढ़ना - लिखना नही आता। कुछ बच्चे सही तरह से बोल भी नही सकते, बात करते समय अटकते है या इनके बोलने मे प्रवाह नही होती। लेकिन यह स्थिति हम बड़ो के साथ हो सकती है। हम भी मंच से बोलते समय घबरा जाते है, शब्द अटकने लगते है और वाक्य संरचनाएँ गड़बड़ा जाती है। इसका कारण है विभिन्न स्थितियो मे भाषा-प्रयोग के पर्याप्त अवसर न मिलना। तो एक बात यह हुई कि बच्चो को विभिन्न स्थितियो और समूहो मे बात करने के अवसर देना विद्यालय मे भाषा शिक्षण का एक उद्देश्य हो सकता है। लेकिन अपेक्षाकृत बड़े जनसमुदाय से जूड़ने और उन तक अपनी बात पहुँचाने के लिए उस समुदाय की भाषा को सीखना भी उद्देश्य हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि बच्चे अपनी मातृभाषा मे अर्जित कुशलताओ के सहारे एक ऐसी भाषा के प्रयोग मे भी पारंगत हो जाए जिसमे अपेक्षाकृत अधिक व्यवहार या 'व्यापार' होता है। हो पढ़ने - लिखने की कुशलता बच्चे मे हो, यह जरूरी नही है। बिहार जैसे राज्य के दूरवर्ती गावो मे बच्चों को अखबार भी देखने को मिलता होगा, इस संदेह को नकारा नही जा सकता। अपनी बात को अधिक व्यक्तियो तक पहुचाने के लिए और संरक्षित रखने के लिए भी भाषा की लिखित व्यवस्था पर अधिकार करना जरुरी है। जैसे - जैसे बच्चो की आयु बढ़ेगी, वैसे - वैसे उनका संज्ञानात्मक स्तर भी बढ़ेगा और वे भाषा की बारीकियो, उनमे छिपे अर्थ को पहचान सकेंगे। इसके लिए पाठ्य-पुस्तक, बाल - साहित्य, विभिन्न बाल पत्रिकाएँ मदद कर सकती है जिसका निर्माण इस उद्देश्य से किया जाता है कि बच्चों मे भाषा की मौखिक कुशलता के साथ साथ लिखित कुशलता भी विकसित हो सके।

D. T. O